# अध्याय 7

## शरतचन्द्र और प्रेमचंद के उपन्यासों का तुलनात्मक मूल्यांकन

# शरतचन्द्र और प्रेमचंद के उपन्यासों का तुलनात्मक मूल्यांकन

शरतचन्द्र और प्रेमचंद दोनों की लोकप्रियता की कोई सीमा नहीं हैं। प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के आधार स्तंभ है तो शरतचन्द्र बांग्ला साहित्य के। आज हिन्दी और बांग्ला साहित्य जिस मुकाम पर खड़ा है, उसमें इन दोनों कलाकारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका हैं या कहें कि ये दोनों नींव हैं। दोनों ही कलाकारों ने अपने व्यक्तिगत और रचनात्मक शक्ति से समाज को आंदोलित किया है।

शरतचन्द्र और प्रेमचंद दोनों लेखक गहरे रूप से भारतीय स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े थे। ये दोनों जैसे अपनी रचनात्मक शक्ति से स्वाधीनता आंदोलन को जुझारू बना रहे थे, वैसे ही व्यक्तिगत रूप से भी राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। स्वाधीनता आंदोलन से दोनों के जुड़े होने के रूप भिन्न हो सकते हैं, स्तर अलग हो सकता है पर दोनों के सक्रिय योगदान में कोई संदेह नहीं है। शरतचन्द्र सीधे तौर से भारतीय राजनीति से जुड़े थे। वे हावड़ा कांग्रेस कमेटी के सभापति रहे थे। इतना ही नहीं रवीन्द्रनाथ और देशबंधु के साथ उन्होंने अलग–अलग मंच से भाषण भी दिया था। वहीं दूसरी ओर प्रेमचंद रचनात्मक स्तर पर अधिक जुड़े थे। दोनों लेखकों की स्वाधीनता प्राप्ति की दृष्टि में अंतर अवश्य था किन्तु लक्ष्य दोनों का एक ही था।

शरतचन्द्र की रचनाओं में हम बंगाल की मूल समस्याओं से परिचित होते हैं। उनके पात्रों में सामाजिक बंधनों से मुक्ति की छटपटाहट और बेचैनी को देखा जा सकता है। प्रेमचंद की रचनाओं से हम पूरे उत्तर भारत की समस्याओं से परिचित होते हैं। प्रेमचंद की रचनाओं में सामाजिक मुक्ति के साथ–साथ राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग भी महत्त्वपूर्ण और मुख्य रूप से उद्‌घाटित हुई है। दूसरी तरफ शरतचन्द्र की रचनाओं में सामाजिक मुक्ति की आकांक्षा को प्रधानता मिली है।

प्रेमचंद और शरतचन्द्र दोनों लेखक बड़े सचेत और दूर द्रष्टा थे। दोनों को इस बात का पूरा इल्म था कि भारत वर्ष के लिए जितनी महत्त्वपूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता है उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जर्जर हो चली सामाजिक बंधनों से मुक्ति। इसलिए दोनों कलाकारों के पात्र एक ओर जहां राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत हैं वहीं दूसरी तरफ सामाजिक बंधनों को तोड़ने की मन में प्रबल आकांक्षा

भी रखते हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों का क्षेत्रफलक वृहद और विस्तृत है। उनके उपन्यासों में हम कई तरह की समस्याएं एक साथ पाते हैं। जैसे कि कर्मभूमि में राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ–साथ अछूत समस्या, लगान की समस्या, मजदूरों के लिए घर की समस्या आदि एक साथ देखी जा सकता है। वहीं शरतचन्द्र ने नारी समस्या को प्रधान रूप से उद्घाटित किया है। उनके उपन्यासों में हम बेमेल विवाह, बाल–विवाह, विधवा समस्या, प्रेम में अतृप्ति आदि समस्याओं से परिचित होते हैं। हम कह सकते हैं कि शरतचन्द्र के उपन्यासों का क्षेत्रफल प्रेमचंद के मुकाबले लघु और सीमित है।

समस्याओं के उद्घाटन, मार्मिक चित्रण और वर्णन में दोनों कलाकारों को महारत हासिल है। प्रेमचंद समस्याओं का उद्घाटन करने के साथ–साथ उसके समाधान की ओर संकेत भी करते हैं, गोदान जैसे अतिवादों को छोड़कर बाकी सभी उपन्यासों की स्थिति यही है। दूसरी ओर शरतचन्द्र समस्या का चित्रण कर छोड़ देते हैं। उनके अनुसार पाठक अगर बौद्धिक व्यायाम कर स्वयं समाधान ढूंढ ले तो उसी में उपन्यास या कृति की सार्थकता है।

स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में दोनों लेखकों की दृष्टियों के पीछे दो समाज पृष्ठभूमि स्वरूप कार्यरत है। बंगाल और उत्तर भारत की सांस्कृतिक चेतना के विकास में लगभग शताब्दी का अंतर है। बंगाल में नवजागरण की चेतना पहले उदित हुई। यूरोप में भले ही नवजागरण की चेतना के पीछे औद्योगिकरण रहा हो, किन्तु भारत में नवजागरण की प्रथम चेतना सांस्कृतिक रूप में ही आई। इसका प्रभाव सीधे समाज पर पड़ा। जिसकी अभिव्यक्ति विशेषकर साहित्य एवं संस्कृति में हुई। अतः चेतनात्मक स्तर पर बंगाल उत्तर भारत से आगे रहा। एक तरफ जहां रवीन्द्रनाथ, बंकिमचन्द्र जैसे श्रेष्ठ साहित्यकार हुए तो दूसरी तरफ राजा राममोहनराय, विद्यासागर और विवेकानन्द जैसे श्रेष्ठ समाज सुधारक हुए। निश्चित रूप से शरतचन्द्र को इन सारे महापुरुषों से एक ठोस आधार भूमि प्राप्त हुई थी। दूसरी तरफ आर्य समाज, गांधीवाद आदि संस्थाए थी, जिससे प्रेमचंद प्रभावित हो रहे थे।

प्रेमचंद और शरतचन्द्र दोनों धरती की ही बातें करते हैं, प्रेमचंद जितने स्वाभाविक ढंग से प्रश्नों को उद्घाटित करते हैं, उतने स्वाभाविक ढंग से उसका उत्तर नहीं दे पाते हैं। उनकी कथाओं के अंत में कोई न कोई चमत्कार अवश्य होता

है और चमत्कार द्वारा ही समस्या का निवारण भी होता है। गोदान छोड़कर उनके बाकी उपन्यासों की यही स्थिति है। शरतचन्द्र जटिल समस्याओं के चित्रकार हैं। हृदय के अंतर्द्वन्द्वों का चित्रण करना एक जटिल कार्य है और नारी के हृदय का अंतर्द्वन्द्व हो तो वह कार्य और जटिल हो जाता है। शरतचन्द्र को नारी अंतर्द्वन्द्वों के चित्रण में महारत हासिल है। इस प्रकार कलात्मक दृष्टि से शरतचन्द्र प्रेमचंद से कहीं आगे हैं। वैसे शरतचन्द्र के पात्र सामाजिक बंधनों से टकराते अवश्य हैं, किन्तु उसे तोड़ने का साहस नहीं जुटा पाते हैं। 'देहाती समाज' में 'रमा' का चरित्र काफी प्रखर है। वह ऐसे कार्यों को अंजाम देती है जो एक पुरुष के लिए भी संभव न हो। किन्तु शरत बाबू कथा के अंत में उसे काशी भेज देते हैं, क्योंकि काशी ही उस समय विधवाओं का शरणदाता था। शरतचन्द्र के पात्रों में सामाजिक बंधनों को तोड़ने की छटपटाहट तो अवश्य है, किन्तु उसे तोड़कर नव समाज निर्माण का साहस उनमें नहीं है। 'देहाती समाज' में अगर 'रमा' और 'रमेश' का विवाह हो जाता तो कदाचित यह उपन्यास अधिक क्रांतिकारी सिद्ध होता।

प्रेमचंद और शरतचन्द्र दोनों की कृतियों में युगीन घटनाक्रमों का व्यापक प्रभाव है। प्रेमचंद ने स्पष्ट कहा है कि साहित्यकार बहुधा अपने देशकाल से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना असंभव हो जाता है और विशाल आत्मा अपने देश बंधुओं के कष्टों से विकल हो उठती है। वह स्वदेश का होकर भी सर्वभौमिक रहता है। प्रेमचंद के उपन्यासों का समाज मुख्यतः निम्न मध्यवर्ग का समाज है। यह वर्ग हर तरह के संघर्षों में लीन है। प्रेमचंद अपने उपन्यासों में निम्नवर्गीय परिवारों के बाह्य संघर्ष और सामंती समाज में इन पर हो रहे अत्याचार, गरीबी और भूखमरी से पीड़ित, शोषित जनता का चित्रण किया है। शरतचन्द्र विस्तृत सामाजिक जीवन की अपेक्षा पारिवारिक जीवन पर अधिक केन्द्रित हैं।

प्रेमचंद और शरतचन्द्र ने समाज की उन मान्यताओं का समर्थन किया है जो सर्वग्राह्य हो। यूरोपीय संस्कृति के दोनों लेखक अंधनुकरण के खिलाफ थे। पश्चिमी सभ्यता का सब कुछ अच्छा है इसे मानने को दोनों लेखक तैयार न थे।

पात्रों के चरित्र चित्रण में दोनों लेखकों की दृष्टि भिन्न है। प्रेमचंद के उपन्यासों में पात्र मानों अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार पात्र की

समस्या निजी न होकर पूरे वर्ग की समस्या बन जाती है। 'गोदान' में होरी की समस्या होरी की न होकर, पूरे उत्तर भारत के कृषक वर्ग की समस्या बनकर पाठक के समक्ष उपस्थित होती है। अतः प्रेमचंद के उपन्यासों में वर्ग संघर्ष उद्घाटित हुआ है। दूसरी ओर शरतचन्द्र के उपन्यासों में व्यक्ति की आत्म–पीड़ा का भिन्न–भिन्न रूपों में चित्रण हुआ है। यही स्थिति 'पथेरदाबी' की भी है जहां अपूर्व और भारती का मिलन नहीं हो पाता है। भारती क्रिश्चियन है और अपूर्व शुद्धाचार ब्राह्मण। दोनों एक दूसरे से बेहद प्रेम करते हैं, किन्तु दोनों का प्रेम विवाह में परिणत नहीं हो पाता है। उन्हें समाज ने अपने नियमों के बंधनों में जकड़ रखा है। भारती एक विप्लवी है और उपन्यास में कहा गया है कि विप्लवियों के लिए निजी जीवन कोई मायने नहीं रखता है। फिर भी डॉक्टर द्वारा 'अपूर्व' को दिया गया जीवनदान उनके प्रेम की स्वीकारोक्ति ही है।

प्रेमचंद और शरतचन्द्र के उपन्यासों में वर्णित वातावरण दोनों के जीवन के प्रति गहरी दृष्टि का परिचायक है। दोनों उपन्यासकारों की जीवन के प्रति दृष्टि में कुछ भिन्नताएं भी हैं और यह भिन्नता उनकी रचनाओं में भी दृष्टिगोचर होती हैं। प्रेमचंद मानव जीवन की बाह्य परिस्थितियों का वर्णन एवं विश्लेषण करते हैं। जबकि शरतचन्द्र मानव जीवन के अंतर्द्वन्द्वों का चित्रण करते हैं। प्रेमचंद के पात्रों में जहां अंतर्द्वन्द्वों में जटिल स्थिति उत्पन्न होती है वहां आदर्श बोल उठते हैं। जबकि शरतचन्द्र के पात्रों में आत्मशक्ति की प्रधानता है, यही आत्म शक्ति आगे चलकर पात्रों में अंतर्द्वन्द्वों की स्थिति से जूझने की प्रेरणा प्रदान करती है। अतः शरतचन्द्र बाह्य से अधिक पात्रों के अंतः पक्ष का चित्रण करते हैं। वे कहते हैं– "संसार में सिर्फ बाहरी घटनाओं को अगल–बगल लंबी सजाकर हृदयों का पानी नहीं नापा जा सकता।"[1] मनुष्य जीवन के दोनों पक्षों सुख और दुःख को दोनों चित्रकारों ने सुंदर ढंग से चित्रित किया है।

शरतचन्द्र के पात्रों को हम द्वन्द्व में जूझते हुए पाते हैं। उनके पात्र संस्कारों और विचारों के बीच द्वन्द्व से जूझ रहे हैं। एक तरफ व्यक्ति के निजी संस्कार तथा दूसरी तरफ व्यक्ति की निजी अनुभूति जो संस्कारों से मेल नहीं खाती है, नतीजतन दोनों में एक अंतर्द्वन्द्व हमेशा चलता रहता है। उदाहरणस्वरूप देहाती समाज की 'रमा' जिसके संस्कार ने उसे रमेश से दूर रखा है। उसे जमींदार घराने की कुल,

जाति, मर्यादा ने रोक रखा है। दूसरी तरफ उसकी अपनी अनुभूति है, जो पल–पल हृदय में प्रेमाभिव्यक्ति की चोट करती रहती है। ऐसी परिस्थितियों से उपजे द्वन्द्व का चित्रण 'रमा' के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होता है। शरतचन्द्र और प्रेमचंद ने जीवन में प्रेम को अत्यधिक महत्त्व दिया है। शरतचन्द्र मानते हैं कि प्रेम का कोई जात, धर्म, कुल आदि नहीं होता। प्रेम समाज के सभी नियम–कानून से ऊपर है। वहीं प्रेमचंद प्रेम को ईश्वरीय, दैवीय वरदान मानते हैं तथा इसके अनादर को पाप समझते हैं। प्रेमचंद का विचार है कि प्रेम का संबंध संसार के बाकी सभी संबंधों से श्रेष्ठ और पवित्र है। दूसरी ओर शरतचन्द्र भी प्रेम को पवित्र मानते हैं। चाहे वह प्रेम वेश्यालय के किसी कोने में ही क्यों न पनप रहा हो। यही दोनों लेखकों की महानता है कि इन्होंने कीचड़ में खिले कमल की खुशबू को समाज के केन्द्र में रखकर, पूरे समाज को सुवासित कर दिया है। शरतचन्द्र ने आर्थिक पीड़न का चित्रण नहीं किया है, जबकि प्रेमचंद का सर्वोत्कृष्ट उपन्यास 'गोदान' आर्थिक त्रासदी पर आधारित है। डॉ. सुबोध सेनगुप्त का कथन है– "शरतचन्द्र ने समाज शक्ति पर चोट की है। प्रधानतया नीति की ओर से। उन्होंने अर्थ–नीति की ओर से उतना आघात नहीं किया है। हमारा देश दरिद्रता से पीड़ित है और इस दैन्य का हाहाकार उनकी रचनाओं में प्रकट न हुआ हो यह बात भी नहीं है। किंतु उनकी रची हुई अधिकांश प्रणय की कहानियों में दारिद्रय के पीड़न का परिचय नहीं है।"[2] मार्क्स ने आर्थिक वर्गों का विरोध किया है। उन्हें विश्वास था कि सामाजिक परिवर्तन मुख्यतः आर्थिक वर्ग संघर्षों से स्थिर हुए हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों में युगीन आर्थिक स्थितियों का स्पष्ट चित्रण हुआ है। आर्थिक जटिलताओं से उत्पन्न वर्ग संघर्ष का चित्रण, प्रेमचंद ने बड़े मार्मिक ढंग से किया है। प्रेमचंद के उपन्यासों में एक तरफ जहां कृषक जमींदार से संघर्षरत हैं वहीं मजदूर पूंजीपतियों से संघर्षरत हैं। शरतचन्द्र किसानों के संघर्ष को ग्रामीण समाज की समस्याओं के अंतर्गत चित्रित करते हैं। ग्रामीण समाज में व्याप्त निर्धनता, अशिक्षा आदि का चित्रण शरतचन्द्र ने किया है।

उत्तर प्रदेश और बंगाल की सामाजिक परिस्थितियों में भिन्नता अवश्य थी, किन्तु इन दोनों समाजों की राजनैतिक व्यवस्था में कोई खास अंतर नहीं था। दोनों प्रदेशों में सामंतवाद का बोलबाला था। प्रेमचंद के उपन्यासों में सामंती शोषण तले पिसते कृषक वर्ग की करुण गाथा का चित्रण है। शरतचन्द्र के उपन्यासों में सामंती

समाज में वैयक्तिक समस्याओं से बंधे हुए मानव हृदय का चित्रण है। किसानों पर हो रहे अत्याचार, शोषण का चित्रण शरतचन्द्र के यहां उस प्रकार से नहीं है, जिस प्रकार से प्रेमचंद के यहां है।

इस प्रकार से भारतीय समाज में चल रहे 'मुक्ति संघर्ष' को दोनों कलाकार, अपनी–अपनी दृष्टियों से देख रहे थे। स्वाधीनता संग्राम को लेकर दोनों में सैद्धांतिक मतभेद अवश्य हो सकता है, किन्तु व्यावहारिक स्तर पर दोनों काफी निकट थे। दोनों कलाकार गांधीवादी थे और गांधी के आदर्शों से काफी प्रभावित थे, किन्तु गांधी दर्शन और विचारधारा को दोनों ने अपनी–अपनी दृष्टि से देखा है, फिर साहित्य में कलमबद्ध किया है। प्रेमचंद के उपन्यासों में गांधीवादी विचारधारा जस की तस मिलती है, जबकि शरतचन्द्र के यहां हम गांधीवादी विचारधारा की अभिव्यक्ति सार रूप में पाते हैं। प्रेमचंद के पात्र गांधीवादी उसूलों के नायक है, वे चरखा कातते हैं, सत्याग्रह करते हैं, यथास्थान गांधीवादी विचारधारा का प्रचार भी करते हैं। जबकि शरतचन्द्र के पात्र गांधीवादी विचारों को यथास्थान प्रकट करते हैं।

शरतचन्द भारतीय संस्कृति के समर्थक थे। उन्होंने पाश्चात्य संस्कृति का विरोध किया है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में यह तथ्य ध्वनित होता है। उन्होंने एक ओर जहां दोनों संस्कृतियों की बुराइयों की कटु आलोचना की है। वहीं उनकी अच्छाइयों का स्वागत किया है। 'शेष प्रश्न' में 'कमल' और 'आशुबाबू' के जरिए यह द्वन्द्व साफ देख सकते हैं। 'कमल' एक तरफ जहां भारतीय संस्कृति की आलोचना करती है वहीं आशुाबाबू के जरिए भारतीय संस्कृति की अच्छाइयों को उद्घाटित किया गया है। लोक संस्कृति का चित्रण दोनों कलाकारों ने बाखूबी किया है। शरतचन्द्र ने गांव के वातावरण का चित्रण बहुत कम किया है। फलतः लोकसंस्कृति का चित्रण शरतचन्द्र के यहां कम है। दूसरी तरफ प्रेमचंद ग्रामीण कथाकार है। उनके उपन्यासों में ग्रामीण वातावरण अपनी संपूर्णता में उपस्थित हुआ है। प्रेमचंद की सहानुभूति भारतीय ग्रामीण परिवेश से अधिक रही है। अतः लोकसंस्कृति के दृश्य, प्रेमचंद के उपन्यासों में अधिक है। ग्रामीण जीवन की संध्या क्रीड़ा, चौपाल आदि का हम सुंदर, सुनियोजित वर्णन प्रेमचंद के यहां पाते हैं। शरतचन्द्र की दृष्टि मध्यवर्ग की पारिवारिक समस्याओं को अंकित करने में अधिक रही है। मध्यवर्ग की संस्कृति द्वन्द्वों का चित्रण शरतचन्द्र के यहां अधिक है।

धार्मिक कुरीतियों का खण्डन दोनों लेखकों ने किया है। 'गोदान' में प्रेमचंद ने धार्मिक शोषण का नग्नरूप चित्रित किया हैं। 'होरी' मरजाद और बिरादरी के डर से ऋण लेता है और आजीवन उसके बोझ तले दबा रह जाता है। होरी को इस बात का भी डर है कि ब्राह्मण का पैसा अगर न अदा किया तो पाप लगेगा, 'हड्डी फूटकर निकलेगी'। शरतचन्द्र ने 'पथ के दावेदार' में अपूर्व को एक शुद्धाचारी ब्राह्मण के रूप में दर्शाया है, जो ईसाई का स्पर्श किया हुआ भोजन भी नहीं करना चाहता है। अपूर्व के संस्कारों में बंगाल की रूढ़ परंपराओं को देखा जा सकता है। किन्तु भारती के प्रति अपूर्व के प्रेम ने धीरे–धीरे इन रूढ़िवादी परंपराओं को चुनौती देना शुरू कर दिया, यह विद्रोह बंगाल के आधुनिक युवक का विद्रोह है।

प्रेमचंद उपन्यास को मानव चरित्र का दर्पण मानते हैं और शरतचन्द्र उपन्यास को मानवीय आकांक्षाओं के उन्मुक्त वर्णन का माध्यम मानते हैं। शरत बाबू के अनुसार अगर मनुष्य के जीवन में यथार्थ स्वरूप की पहचान करना हो तो साहित्य से बेहतर सामग्री और कोई भी नहीं है। दूसरी ओर प्रेमचंद साहित्य को समाज को आलोकित करने वाला एक मशाल मानते हैं। वे कहते हैं "साहित्यकार का काम केवल पाठकों का मन बहलाना नहीं है। यह तो भाटों और मदारियों, विदूषकों और मसखरों का काम है। साहित्यकार का पद इससे कहीं ऊंचा है। वह हमारा पथ प्रदर्शक होता है, वह हमारे मनुष्यत्व को जगाता है, हममें सद्भावों का संचार करता है, हमारी दृष्टि को फैलाता है। कम से कम उसका यही उद्देश्य होना चाहिए।"[3] साहित्य के प्रति दोनों लेखकों की दृष्टि दोनों के महान साहित्यकार होने का सूचक है।

---

[1]श्रीकांत, III पर्व, पृ. 96

2 शरत प्रतिभा, डॉ. सुबोध चन्द्र सेन गुप्त, पृ. 25–26

3साहित्य का उद्देश्य, प्रेमचंद, पृ. 58